कला के आयाम

रात का आसमान और उसे देखना

शेफाली जैन

गर्मियों की छुट्टियों में मैं और मेरे चचेरे भाई-बहन गुजरात के एक छोटे-से गाँव अगास में इकट्ठे होते थे। हम सबको इस मुलाकात का बेसब्री से इन्तज़ार रहता था। हम वहाँ खूब मज़े करते। खेतों में घूमते, साइकिल चलाते, गिलहरियों को दाना देते, घण्टों तक बन्दरों और मोरों को देखते और रात में छत पर ठण्डी खुली हवा के मज़े लेते हुए तारे देखते!

रात का आसमान वहाँ बहुत सुन्दर और साफ दिखता था। छत पर बिस्तर में लेटे हुए अक्सर हम बच्चों में कॉम्पिटिशन होता कि कौन पहले पुच्छल तारा (comet) देख पाएगा। आज दिल्ली जैसे बड़े और प्रदूषित शहर में रहते हुए लगता है पुच्छल तारा तो क्या एक तारा भी आसमान में नसीब हो जाए तो बड़ी खुशकिस्मती होगी!

ऑब्ज़र्वेटरी प्रदर्शनी

कुछ समय पहले मैंने दिल्ली में 'खोज' नामक आर्ट स्पेस में एक बड़ी दिलचस्प प्रदर्शनी देखी। इसका केन्द्र बिन्दु था – रात का आसमान और उसे देखना। प्रदर्शनी का नाम था 'द ऑब्ज़र्वेटरी: सैकेंड साइट' और कलाकार थे रोहिणी देवाशर और लीजन सेवन।

ऑब्ज़र्वेटरी वह खास जगह होती है जहाँ पर लोग ऑप्टिकल यंत्र जैसे कि टेलिस्कोप की मदद से अन्तरिक्ष का निरीक्षण कर सकते हैं। अक्सर ऑब्ज़र्वेटरी किसी खुली या फिर ऊँची जगह पर बनाई जाती हैं। जैसे किसी रेगिस्तान में या फिर ऊँचे पहाड़ पर। शहर से दूर, ताकि शहर की रौशनी और प्रदूषण आसमान को धुँधला न कर दे।

इस प्रदर्शनी का नाम ऑब्ज़र्वेटरी था क्योंकि इसकी कल्पना शुरू हुई थी एक ऑब्ज़र्वेटरी पर। यह ऑब्ज़र्वेटरी अलवर, राजस्थान में स्थित है – सागर स्कूल ऑब्ज़र्वेटरी। स्कूल के बच्चे अन्तरिक्ष के निरीक्षण के लिए इस ऑब्ज़र्वेटरी का इस्तेमाल करते हैं।

देखना क्या होता है

रोहिणी देवाशर एक कलाकार और शौकिया खगोल विज्ञानी हैं। उन्होंने कुछ लोगों को सागर ऑब्ज़र्वेटरी में एक रात शनि ग्रह देखने का न्योता दिया। मकसद था मिलकर शनि ग्रह को टेलिस्कोप से देखना और देखने के इस अनुभव पर अपने विचार साझा करना।

दिल्ली के 'खोज' आर्ट स्पेस में 'द ऑब्ज़र्वेटरी: सैकेंड साइट' प्रदर्शनी फोटो: खोज, नई दिल्ली

दिल्ली के 'खोज' आर्ट स्पेस में 'द ऑब्ज़र्वेटरी: सैकेंड साइट' प्रदर्शनी फोटो: खोज, नई दिल्ली

रोहिणी की दिलचस्पी है देखने की प्रक्रिया और देखने के तरीकों में। हम कैसे देखते हैं चीज़ों को? आँखों से? पर कभी-कभी हम चीज़ों को देखने के लिए आँखों के अलावा यंत्रों का भी इस्तेमाल करते हैं। जैसे टेलिस्कोप, माइक्रोस्कोप, कैमरा, चश्मा।

हमारे देखने के तरीके केवल इन यंत्रों के इस्तेमाल की तकनीकों पर ही नहीं बल्कि हमारी सामजिक पृष्ठभूमि पर भी निर्भर करते हैं। उदाहरण के लिए गोंड समाज में पेड़ को एक स्पिरिट की तरह देखते हैं, जिनकी अपनी निजी कहानी, अपना अस्तित्व है।

शनि ग्रह एक, शक्लें अनेक

प्रदर्शनी के दौरान रोहिणी ने बताया कि सत्रहवीं सदी में जब गैलीलियो ने पहली बार अपने टेलिस्कोप से शनि ग्रह देखा तो उन्हें लगा कि इसके दोनों तरफ दो और ग्रह हैं। यह है गैलीलियो की ड्राइंग।

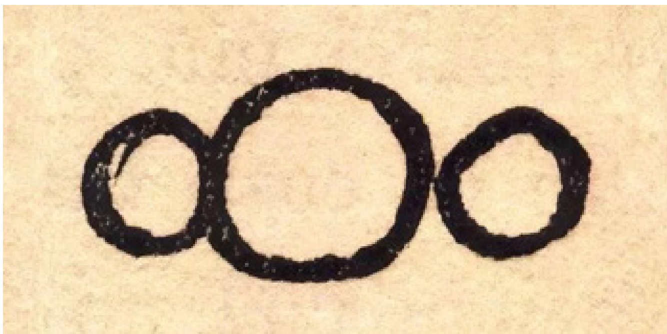

1610 में गैलीलियो द्वारा बनाया गया शनि ग्रह का चित्र

आज जब हम सैटेलाइट से खींची गई तस्वीर देखते हैं तो हमें शनि के वलय (rings) दिखाई देते हैं।

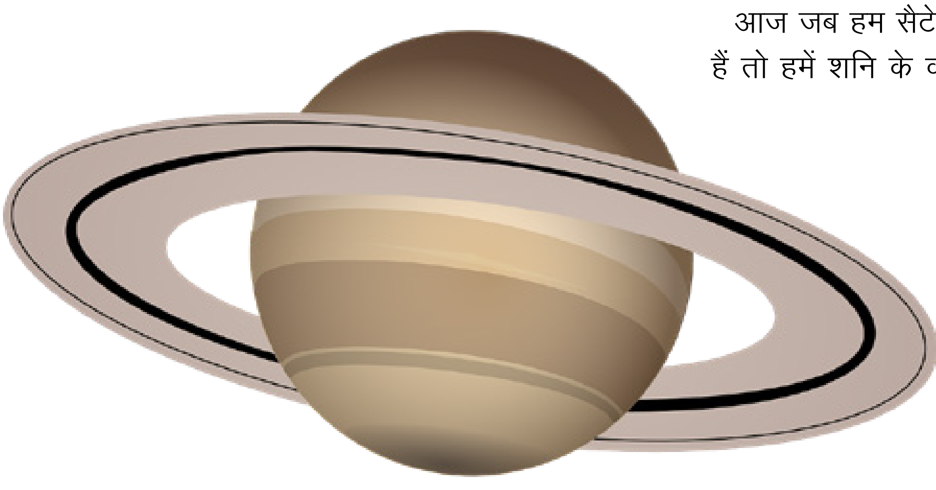

द नासा/ईएसए हबल स्पेस टेलिस्कोप से ली गई तस्वीर।

फोटो: नासा, ईसीए, ए. सिमोन (गोडर्ड स्पेस फाइट सेंटर) और एम. एच. वोंग (यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बर्कले), 2023

सोपस्टोन से बनी शनि की मूर्ति, ऐशमोलियन म्यूज़ियम, यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड, 1850-55

जब उन्नीसवीं शताब्दी में जयपुर के एक मूर्तिकार ने शनि की कल्पना की तो वह इस शक्ल में तब्दील हुई।

तो शनि की कई शक्लें हमारे पास हैं। हर शक्ल अपना एक सच लेकर हमारे सामने मौजूद है। इन 'सच्चाइयों' पर समय-समय पर सवाल भी उठाए जाते हैं ताकि हम अपने विचारों और आस्था को लचीला और संवेदनशील बनाए रखें, ना कि ठोस और कठोर।

तरह-तरह का देखना

कभी-कभी हम चीज़ों को छूकर भी शक्ल देते हैं। कभी सूँघकर या फिर याद करके। ये अलग-अलग तरीके हैं एक ही चीज़ को देखने के, उसे शक्ल देने के। कल्पना भी एक तरह की नज़र है। कला अक्सर कल्पना की नज़र का इस्तेमाल करती है, चाहे वह चित्रकला हो या लेखन, या फिर नृत्य आदि। और यह कल्पना हमें उन शक्लों को साझा करने का मौका देती है जो अकेले विज्ञान, धर्म, परम्परा की नज़र शायद ना दे पाए।

रोहिणी के लिए प्रदर्शनी का पहला पड़ाव था 'देखने' के इर्द-गिर्द सवालों पर कुछ लोगों के साथ ऑब्ज़र्वेटरी में विचार-विमर्श करना। अगले पड़ाव में रोहिणी और लीजन सेवन (बर्लिन में रहने वाली एक कलाकार) ने साथ मिलकर यह प्रस्ताव रखा कि अब शनि ग्रह देखने की प्रक्रिया और उससे उठे सवालों/विचारों को कला का रूप दें। खोज आर्ट स्पेस में जो प्रदर्शनी मैं देखने गई, वह इसी प्रस्ताव का नतीजा था। यह प्रदर्शनी एक कोलाबोरेटिव आर्ट प्रोजेक्ट था, यानी कई कलाकारों के बीच वार्तालाप और विमर्श से उभरा आर्ट प्रोजेक्ट। रोहिणी देवाशर, लीजन सेवन, डे ईव कॉमेट, नॉर्विन थराईल और सोना शहानी शुक्ला ने मिलकर इस प्रदर्शनी को रूप दिया[1]।

मैं तुम्हें इनमें से एक कलाकार, लीजन सेवन, के आर्टवर्क के बारे में बताना चाहूँगी। उन्होंने पिछले पचास सालों में अलग-अलग खगोल विज्ञानियों द्वारा ली गईं शनि की शक्लों या तस्वीरों को साउण्ड में तब्दील किया। यह तो हमने पहले ही समझ लिया है कि देखने की प्रक्रिया स्थायी अनुभव नहीं है। इस प्रक्रिया के दौरान बहुत कुछ बदल सकता है – जैसे कि समय, बीच का आसमान, रौशनी, हमारे विचार, हमारा समाज, वगैरह-वगैरह। तो लीजन सेवन ने सोचा कि देखने की प्रक्रिया में बदलाव अगर लाज़िमी है ही तो क्यों ना वे शनि ग्रह की इन सारी शक्लों का एक ध्वन्यात्मक चित्र बनाएँ। उन्होंने म्यूज़िकल इन्स्ट्रूमेंट डिजिटल इंटरफेस (MIDI) की मदद से इन शक्लों को पहले ऑडियो नोट्स (स्वरों) में तब्दील किया। फिर इन्हें एबलटन (Ableton) नामक डिजिटल ऑडियो वर्कस्टेशन (DAW) सॉफ्टवेयर में सम्पादित करके शनि की एक ध्वन्यात्मक तस्वीर तैयार की। इसे तुम केवल सुन सकते हो[2]।

1रोहिणी और लीजन सेवन के कोलाबोरेटिव आर्ट प्रोजेक्ट की वेबसाइट: https://www.theobservatorysecond.site/

2लीजन सेवन द्वारा बनाई शनि ग्रह की ध्वन्यात्मक तस्वीर का एहसास लेने के लिए इस लिंक पर जा सकते हो: https://www.theobservatorysecond.site/planisphere

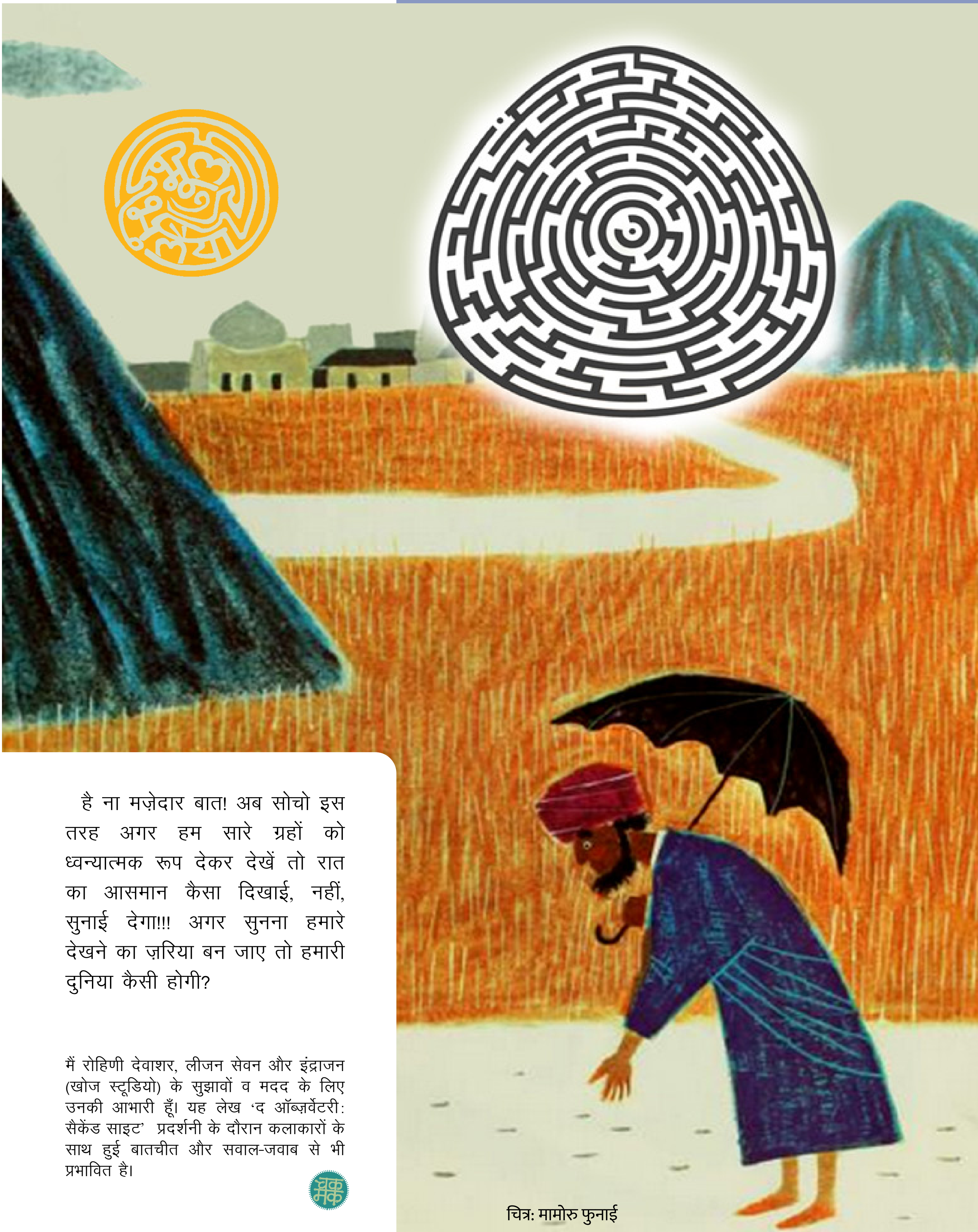

है ना मज़ेदार बात! अब सोचो इस तरह अगर हम सारे ग्रहों को ध्वन्यात्मक रूप देकर देखें तो रात का आसमान कैसा दिखाई, नहीं, सुनाई देगा!!! अगर सुनना हमारे देखने का ज़रिया बन जाए तो हमारी दुनिया कैसी होगी?

मैं रोहिणी देवाशर, लीजन सेवन और इंद्राजन (खोज स्टूडियो) के सुझावों व मदद के लिए उनकी आभारी हूँ। यह लेख 'द ऑब्ज़र्वेटरी: सैकेंड साइट' प्रदर्शनी के दौरान कलाकारों के साथ हुई बातचीत और सवाल-जवाब से भी प्रभावित है।

चित्र: मामोरु फुनाई